شهيد

الشهيد محمد ضياء الرحمن

تاريخ الميلاد:	1 مارس, 1993
تاريخ الاستشهاد:	5 أغسطس, 2024
المحافظة:	رانجبور
المنطقة:	راجباري

نبذة موجزة عن الشهيد

وُلد الشهيد محمد ضياء الرحمن في 20 فبراير 1981، في قرية " نَارَابَارِي، مُوْنْشِيْبَارَا " التابعة للاتحاد المحلي رقم 6 "بَانْدَارَا"، بمركز "بِيْرُوْل" محافظة "دِيْنَاجْبُوْر". اسم والده: المرحوم عبد الكافي اسم والدته: المرحومة خالدة بيجُوْم ينتمي الشهيد ضياء الرحمن إلى أسرة مكونة من خمسة إخوة. تقع قريتهم " نَارَابَارِي، مُوْنْشِيْبَارَا " على مقربة من الحدود ويمر بجوارها خزان مائي يُعرف بـ "دَارَايِل بِيْل". تتميز القرية بظلالها الوارفة وجمالها الطبيعي حيث تنتشر فيها العديد من البرك والبحيرات الصغيرة والكبيرة مما يضفي عليها بهاءً وسحرًا طبيعيًا فريدًا. وقد قضى الشهيد محمد ضياء الرحمن طفولته في هذه القرية الساحرة التي تبدو وكأنها لوحة فنية مرسومة بإتقان.

كانت القرية تزدان بعدد من بساتين اللِّيتْشِي حيث أمضى الشهيد محمد ضياء الرحمن طفولته في ظلال أشجارها، يتذوّق ثمار اللِّيتْشِي خلال شهر "جَيشْتُو" – شهر العسل – ويتجول على الطرق الترابية المفعمة بعبق الطفولة. أما ظهيرات الصيف الحارّة فكانت مياه البرك والبحيرات الباردة تُنعش روحه وتُخفف من لهيب الأيام. وعند الاستماع إلى وصف هذه القرية، تخطر في البال – دون إرادة – أبيات من القصيدة الريفية الشهيرة "الدعوة" للشاعر جسيم الدين:

"ستذهب معي، أخي، إلى قريتنا الصغيرة،حيث النسيم الحالم بين الأشجار واللبلاب،حيث بيتي مغمور بالحنان والمحبّة،في حضن أمي، وفي دلع أختي، وفي دفء أخي،تعال يا أخي، تعال إلى قريتنا الصغيرة."

بدأ الشهيد محمد ضياء الرحمن حياته المهنية في قطاع صناعة الملابس الجاهزة بعد إنهاء دراسته، وأقام في مدينة دكا مع أسرته لأكثر من خمسة وعشرين عامًا. وكان يشغل في الفترة الأخيرة وظيفة مسؤول ضبط الجودة في مجموعة "فلورنس". عانى الشعب البنغلاديشي معاناة شديدة خلال فترة الحكم الحالي، إذ شهدت البلاد سلسلة من الأزمات والانتهاكات، شملت القتل خارج نطاق القانون، والاختفاء القسري، والتخلف عن سداد القروض، وسرقة احتياطي النقد الأجنبي، وتهريب الأموال إلى الخارج، فضلًا عن تفشي الفساد في قطاع التعليم، وتدهور الخدمات الصحية، وفشل الحكومة في ضبط الأسواق، مما أدى إلى الارتفاع المستمر في أسعار السلع الأساسية.
كان ظهر ضياء الرحمن ورفاقه قد التصق بالحائط ولم يكن أمامهم من سبيل سوى المقاومة. ومع تصاعد الحراك الشعبي المطالب بإسقاط النظام الديكتاتوري، كان هو نفسه يحرص على التعبير عن تضامنه مع الطلاب والجماهير فيشارك بانتظام في جميع الفعاليات كلما سمحت له الظروف. وكان يخرج من بيته للمشاركة في الحراك بسرّية تامة، وأحيانًا كان يخبر أهل بيته قائلاً: "لدي عمل في المكتب." ولكنه عند عودته، كان يروي لزوجته، بكل فخر واعتزاز، تفاصيل ما جرى في فعاليات ذلك اليوم، وكان يشاركها بها وحدها، بالإضافة إلى طفليه. وفي البداية، حاولت زوجته شهناز أن تثنيه عن المشاركة، لكنها، حينما رأت ثباته وإصراره، لم تعد تملك منعه. وفي 5 أغسطس، خرج من منزله للمشاركة في برنامج "المسيرة الطويلة إلى دكا"، الذي كان ضمن فعاليات الحراك الطلابي ضد التمييز. وعندما وصل موكبهم إلى منطقة أُوْتَّارَا عَظِيْمْبُوْ
ر، أطلقت الشرطة المتحمسة بإفراط النيران بشكل عشوائي على الجماهير المشاركة في المسيرة. إحدى الرصاصات القاتلة اخترقت الجانب الأيسر من صدر ضياء الرحمن وخرجت من ظهره. وسقط على الأرض غارقًا في دمائه. سارع أحد زملائه ممن كانوا برفقته بنقله إلى أقرب مستشفى، ولكن لعدم تلقيه العلاج هناك، تم نقله على وجه السرعة إلى مستشفى السرطان، ثم بعد تدهور حالته نُقل إلى مستشفى كلية الطب بدكا وهو في وضع حرج. وبعد صراع دام أربعة أيام مع الموت، فارق الحياة في 9 أغسطس عند الساعة 7:20

مساءً.

"نسيم الحرية، أتنشّقه بملء صدري في كل مرة،
فتتجلى في خاطري صوركم، أنتم فخر الأمم جمعاء!"
كلمات من قلب العائلة: شهادة زوجة الشهيد وشقيقه الأكبر
قالت زوجة الشهيد، شَاهْنَاز أختر: "لا أستطيع أن أصف حقًا كيف كان زوجي؛ لقد تعلّمت منه ما تعنيه الطيبة في أسمى صورها. كان مواظبًا على أداء الصلوات، وكان دائمًا يحثّني على الالتزام بها. كان يسعى جاهدًا للتمسك بأحكام الإسلام الأساسية، وعلاقته بالجميع كانت مبنية على الصدق والمودة. أما من ناحية الكرامة وعزّة النفس، فقد كان حقًا مختلفًا عن الآخرين."
وقال شقيقه الأكبر: "كان ضياء الرحمن الرابع بيننا من بين خمسة إخوة. وقد أقام في دكا لأكثر من خمسة وعشرين عامًا بسبب عمله. لقد كنا نُعجب دومًا ببساطته ونمط حياته المتواضع. واليوم، ترك وراءه طفلين يتيمين. وسأظل، حتى آخر يوم في حياتي، أنتظر رؤية العدالة تتحقق في هذه الجريمة الوحشية."

الوضع الاقتصادي لأسرة الشهيد :
كان الشهيد محمد ضياء الرحمن المعيل الوحيد لأسرته، وقد كانت أسرته تعيش بدخله حياة مستقرة وميسورة نسبيًا. لكن بعد استشهاده، كأن السماء قد انهارت على تلك الأسرة المفجوعة. لم تعد زوجته قادرة على دفع إيجار المنزل المستأجر في دكا، حيث كانوا يقيمون، فاضطرت إلى التخلي عنه والتفكير في العودة إلى منزل العائلة في القرية. وكان الشهيد، قبل استشهاده، قد بدأ في بناء بيت متواضع في قريته، إلا أن المشروع توقف في منتصفه. ورغم أن المنزل لا يزال شبه مكتمل، فإن الأسرة قررت الانتقال إليه بعد مغادرتها العاصمة. ومن ناحية أخرى، اضطر نجله صراف حسين، بحزن عميق، إلى مغادرة مدرسته المحبوبة "مدرسة شروق الشمس العامة ". وكذلك اضطرت شقيقته الصغيرة جافنا إلى ترك مدرستها والانضمام إلى العائلة في الرحيل.
المقترحات:
1.تقديم دعم مالي مقطوع لزوجة الشهيد، بصفتها الوصي القانوني الحالي على الأسرة، يُعدّ أمرًا ضروريًا لتخفيف أعباء الحياة عنها في ظل غياب المعيل.
2.توفير دعم دائم لتعليم أبناء الشهيد، لا سيما في مراحل التعليم العالي، وتأمين مستقبلهم الدراسي والمهني.
3.تقديم العون لاستكمال بناء المنزل الذي شرع الشهيد في تشييده قبل استشهاده، والذي تعيش فيه الأسرة حاليًا.

الشهيد محمد ضياء الرحمن في سطور:
الاسم الكامل: محمد ضياء الرحمن
تاريخ الميلاد: 20 فبراير 1981
المهنة: موظف
اسم الأب: المرحوم محمد عبد الكافي
اسم الأم: المرحومة السيدة خالدة
اسم الزوجة: السيدة شَاهْنَاز أختر
مهنة الزوجة وعمرها: ربة منزل، 35 عامًا
الدخل الشهري للأسرة: لا يوجد أي دخل منذ استشهاد المعيل
عدد أفراد الأسرة الحالي: 3 أفراد (الزوجة + طفلان)
تاريخ الإصابة5 :أغسطس 2024م
مكان الإصابة: منطقة عَظِيْمْپُوْر، أُوْتَّارَا، دكا
الجهة المعتدية: قوات الشرطة

تاريخ الوفاة: 9 أغسطس 2024م، الساعة 7:20 مساءً

مكان الوفاة: مستشفى كلية الطب بدكا

مكان الدفن: قرية نَارَابَارِي، مُوْنْشِيْبَارَا، منطقة بِيْرَال، محافظة دِيْنَاجْبُوْر

الإحداثيات الجغرافية:

دائرة العرض: 25°39′58.2″ شمالًا

خط الطول: 88°28′43.3″ شرقًا

العنوان الدائم والحالي: القرية: نَارَابَارِي، مُوْنْشِيْبَارَا، الوحدة المحلية: الوحدة رقم 6، بَانْدَارَا، الناحية الإدارية: بِيْرَال، المحافظة: دِيْنَاجْبُوْر

تفاصيل الاستشهاد والوقائع

শহীদ মোঃ জিয়াউর রহমান ২০ ফেব্রুয়ারি ১৯৮১ সালে দিনাজপুর জেলার বিরল উপজেলাধীন ৬ নং ভাটরা ইউনিয়নের নাড়াবাড়ি মুন্সিপাড়া গ্রামে জন্মগ্রহণ করেন। তাঁর পিতার নাম মরহুম আব্দুল কাফি ও মাতা মরহুমা খালেদা বেগম। শহীদ জিয়াউর রহমানরা পাঁচ ভাই। সীমান্তঘেরা গ্রাম নাড়াবাড়ি মুন্সিপাড়া। গ্রামের পাশ দিয়েই বয়ে গেছে দাঁড়াইল বিল। ছায়ায় ঘেরা মায়ায় ভরা গ্রামটিতে প্রাকৃতিক ঐশ্বর্য এনে দিয়েছে অসংখ্য ছোট বড় পুকুর আর দিঘী। ছবির মত এমনই সুন্দর গ্রামে কেটেছে শহীদ মোহাম্মদ জিয়াউর রহমানের শৈশবকাল।

গ্রামে রয়েছে বেশ কয়েকটি লিচুবাগান। বাগানের গাছগুলোর ছায়ায়। বসে, মধু মাস জ্যৈষ্ঠতে বাগানের লিচু খেয়ে আর গ্রামের মেঠো পথে হেঁটে হেঁটে হয়তো এক সময় শৈশব শেষ হয়েছে তাঁর। গ্রীষ্মের তপ্ত দুপুর গুলোতে হয়তো গ্রামের দিঘী আর পুকুর গুলোর শীতল পানি প্রাণ জুড়িয়েছে তাঁর। গ্রামটির বর্ণনা শুনে মনের অজান্তেই মনে পড়ে যায় পল্লীকবি জসীমউদ্দীনের সেই বিখ্যাত কবিতা 'নিমন্ত্রণ' এর কিছু চরণ,

"তুমি যাবে ভাই যাবে মোর সাথে, আমাদের ছোট গাঁয়, গাছের ছায়ায় লতায় পাতায় উদাসী বনের বায়: মায়া মমতায় জড়াজড়ি করি মোর গেহখানি রহিয়াছে ভরি, মায়ের বুকেতে, বোনের আদরে, ভাইয়ের স্নেহের ছায়, তুমি যাবে ভাই যাবে মোর সাথে, আমাদের ছোট গাঁয়।"

আপোষহীন শহীদ মোঃ জিয়াউর রহমানের আত্মত্যাগ

শহীদ মোঃ জিয়াউর রহমান পড়াশুনা শেষ করে, তৈরী পোশাক খাতে নিজের কর্মজীবন শুরু করেন। তিনি সুদীর্ঘ ২৫ বছর ধরে পরিবার নিয়ে ঢাকায় বসবাস করছিলেন। সর্বশেষ তিনি ফ্লোরেন্স গ্রুপের কোয়ালিটি কন্ট্রোল অফিসার হিসেবে কর্মরত ছিলেন। স্বৈরাচারী হাসিনার শাসনামল পুরোটাতেই দুঃসহ যন্ত্রণা নিয়ে। বেঁচেছে বাংলাদেশের আপামর জনগন। কি ছিল না খুনী হাসিনার শাসনামলে। বিচারবহির্ভূত হত্যা-গুম, ঋণখেলাপি, রিজার্ভ চুরি, দেশের অর্থ বিদেশে পাচার, শিক্ষাখাতে অনিয়মের মহোৎসব, চিকিৎসা খাতের বেহাল দশা আর বাজার নিয়ন্ত্রণ ব্যর্থতার কারণে পাল্লা দিয়ে বাড়তে থাকা নিত্য প্রয়োজনীয় পণ্যের দাম। দেয়ালে পিঠ ঠেকে গিয়েছিল জিয়াউর রহমানদের, আর তাই তো স্বৈরাচারী সরকার পতনের আন্দোলন যখন তীব্র থেকে তীব্রতর হতে থাকে, তখন তিনি নিজে সময় সুযোগ অনুযায়ী ছাত্রজনতার সাথে একাত্মতা পোষণ করে, সকল কর্মসূচিতে নিয়মিত অংশগ্রহণ করতেন তিনি। বাড়িতে অনেকটা গোপনীয়তা রক্ষা করেই আন্দোলনে যেতেন তিনি। কখনো কখনো বলতেন, "অফিসের কাজ আছে।" অথচ বাসায় এসে তার দুই সন্তান ছাড়া স্ত্রীকে গর্ব ভরা বুক নিয়ে বলতেন আন্দোলনের সেদিনের ইতি বৃত্তান্ত। প্রথমদিকেই স্ত্রী শাহনাজ বাঁধা দিলেও পরবর্তীতে তাঁর এমন দৃঢ়চেতা মনোভাব দেখে আর বাঁধা দিতে পারেননি তিনি। সর্বশেষ ৫ আগষ্ট, বৈষম্যবিরোধী ছাত্র আন্দোলনের একদফা কর্মসূচি লংমার্চ টু ঢাকা সফল করার লক্ষ্যে বাড়ি থেকে বের হয়েছিলেন তিনি। তাঁদের মিছিলটি উত্তরা আজমপুর এলাকায় আসলে, লংমার্চে অংশ নেয়া সাধারণ মানুষের ওপর এলোপাতাড়ি গুলিবর্ষণ করে অতি উৎসাহী নরপিশাচ পুলিশ। ঘাতক পুলিশের বুলেট জিয়াউর রহমানের বুকের বামপাশ ছিদ্র করে পিছন দিকে বেরিয়ে পড়ে। সাথে সাথেই রক্তাক্ত অবস্থায় মাটিতে লুটিয়ে পড়েন তিনি। উনার সাথে থাকা এক সহকর্মী উনাকে নিয়ে নিকটস্থ হাসপাতালে যান। তবে সেখানে চিকিৎসা না পেয়ে তড়িঘড়ি করে সেখান থেকে ক্যান্সার হাসপাতালে নিয়ে যান। পরবর্তীতে সেখান থেকে আশঙ্কাজনক অবস্থায় থাকা জিয়াউর রহমানে ঢাকা মেডিকেল কলেজে স্থানান্তর করা হয়। দীর্ঘ চারদিন মৃত্যুর সাথে পাঞ্জা লড়ে, অবশেষে আগষ্টের ৯ তারিখ সন্ধ্যা ৭ টা ২০ মিনিটে জীবনের শেষ নিঃশ্বাস ত্যাগ করেন তিনি।

মুক্ত বাতাস, প্রাণ ভরে শ্বাস নিচ্ছি যতবার, পড়ছো মনে তোমরা সকল জাতির অহংকার।

শহীদ সম্পর্কে স্ত্রীর সহোদর ভাইয়ের অনুভূতি

শহীদের স্ত্রী শাহানাজ আক্তার বলেন, "আমার স্বামী কি রকম ছিল, তা হয়তো আমি বর্ণনা করে বোঝাতে পারবো না। মানুষ কতটা অমায়িক হতে পারে তা ওকে দেখে আমি শিখেছি। নিয়মিত সালাত আদায় করতো সে আর আমাকেও উৎসাহ দিত। ইসলামের মৌলিক বিধান গুলো মেনে চলার চেষ্টা করতো। সবার সাথে আন্তরিকতার সম্পর্ক ছিল তাঁর। আত্মমর্যাদার দিক থেকেও সে ছিল সবার চেয়ে আলাদা।"

শহীদ সম্পর্কে তাঁর বড় ভাই বলেন, 'জিয়াউর ছিল আমাদের পাঁচ ভাইয়ের মধ্যে চতুর্থ। কর্মসূত্রে সে দীর্ঘ ২৫ বছর ধরে ঢাকায় বসবাস করতো। ওর সহজ সরল জীবনযাপন মুগ্ধ করতো আমাদের। এখন তাঁর দুটি সন্তান এতিম হয়ে গেল। আমি জীবনের শেষ দিন পর্যন্ত অপেক্ষা করে হলেও, এই নৃশংস হত্যার বিচার দেখে যেতে চাই।"

শহীদ পরিবারের অর্থনৈতিক অবস্থার বিবরণ

শহীদ মো: জিয়াউর রহমান পরিবারের একমাত্র উপার্জনক্ষম ব্যক্তি

ছিলেন। তাঁর আয় দিয়ে বেশ স্বাচ্ছন্দেই সংসার চলতো। তবে তার শাহাদাতের ঘটনায় যেন আকাশ ভেঙ্গে পড়েছে অসহায় পরিবারটির ওপর। পরিবার নিয়ে জিয়াউর রহমান ঢাকার যে বাসায় ভাড়া থাকতেন, অর্থাভাবে তা ছেড়ে দিয়ে গ্রামের বাড়িতে চলে যাওয়ার পরিকল্পনা করেছেন তাঁর স্ত্রী। গ্রামের বাড়িতে কিছুদিন পূর্বেই ঘর নির্মাণ শুরু করেছিলেন শহীদ মোঃ জিয়াউর রহমান কিন্তু মাঝ পর্যায়েই বন্ধ হয়ে গেল তা। ঢাকা ছেড়ে তাঁর পরিবার গিয়ে এখন সেই আধপাকা বাড়িতেই বসবাস শুরু করবে। এদিকে অনিচ্ছা শর্তেও, শহীদের পুত্র সারাফ হোসেনের প্রিয় 'সানরাইজ পাবলিক স্কুল' ছাড়তে হচ্ছে তাকে। সাথে স্কুল ছাড়ছে হচ্ছে তার ছোট্ট বোন জাফনাকেও।

পরিবারটির সহযোগিতা প্রসঙ্গে

প্রস্তাবনা-১: শহীদ পরিবারের বর্তমান অভিভাবক তাঁর স্ত্রীকে এককালীন কিছু অর্থ সহযোগিতা করা অত্যন্ত জরুরী।

প্রস্তাবনা-২: শহীদের পিতৃহীন দুই সন্তানের উচ্চ শিক্ষা ও ভবিষ্যতের জন্য স্থায়ী কোন সহযোগিতা করা।

প্রস্তাবনা-৩: শহীদের নির্মাণাধীন বাড়িটির নির্মাণসম্পন্ন করতে সহযোগিতা করা।

একনজরে শহীদ পরিচিতি

শহীদের পূর্ণনাম : মো: জিয়াউর রহমান

জন্ম তারিখ : ২০ ফেব্রুয়ারি, ১৯৮১

পেশা বা পদবী : চাকুরীজীবী

পিতার নাম : মরহুম মো: আব্দুল কাফি

মাতার নাম : মরহুম মোছা: খালেদা

স্ত্রীর নাম : মোসা: শাহনাজ আক্তার

স্ত্রীর পেশা ও বয়স : গৃহিনী, ৩৫ বছর

পরিবারের মাসিক আয় : শহীদের অবর্তমানে কোন আয় নেই

পরিবারের বর্তমান সদস্য সংখ্যা : ৩ জন

আহত হওয়ার সময়কাল : ৫ আগস্ট, ২০২৪

আহত হওয়ার স্থান : আজমপুর, উত্তরা, ঢাকা

আক্রমণকারীর পরিচয় : পুলিশ

নিহত হওয়ার সময়কাল : ৯ আগস্ট, ২০২৪, সন্ধ্যা: ৭:২০ মিনিট

নিহত হওয়ার স্থান : ঢাকা মেডিকেল কলেজ

শহীদের কবরের অবস্থান : নাড়াবাড়ি মুন্সিপাড়া, বিরল, দিনাজপুর

জিপিএ লোকেশন :25 3958.2"N 88°28'43.3"E

ঠিকানা ও বর্তমান ঠিকানা: গ্রাম: নাড়াবাড়ি, মুন্সিপাড়া, ইউনিয়ন: ৬ নং ভান্ডারা, উপজেলা: বিরল, জেলা: দিনাজপুর

آية قرآنية

فرحين بما آتاهم الله من فضله ويستبشرون بالذين لم يلحقوا بهم (آل عمران ٣:١٧٠)

الحديث الشريف

أرواح الشهداء في جوف طير خضر. (صحيح مسلم ١٨٨٧)

عدد الدعوات: 0

معرض الصور التذكارية للشهيد